ज्यामिति (द्वि विमीय एवं त्रि विमीय)

लेखक: दीपक कुमार श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग
बी0 एस0 एन0 वी0 स्ना0 महा0, लखनऊ
प्रकाशक: पियरसन एजुकेशन, प्रथम संस्करण, वर्ष 2013, नई दिल्ली

ज्यामिति, गणित की एक महत्वपूर्ण विधा है। द्वि विमीय एवं त्रि विमीय निर्देशांक ज्यामिति, इस विधा की दो अति आवश्यक धारायें हैं। लेखक द्वारा इस पुस्तक को भारत देश के सभी हिन्दी भाषी राज्यों के उन छात्र–छात्राओं की समस्याओं को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है जो हिन्दी माध्यम से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त स्नातक स्तर पर किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं। जहाँ पर उन्हें हिन्दी भाषा में पुस्तकें उपलब्ध न होने के कारण विवश होकर आंग्ल भाषी पुस्तकों से पाठ्यक्रम को विवशतापूर्वक पढ़ना पड़ता है और अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो कि सीधे तौर पर उनके परीक्षा परिणाम को प्रभावित करता है। स्नातक स्तर पर गणित की पुस्तकें हिन्दी माध्यम में पाठकों को सुलभ कराने के इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखक की तरफ से किया गया यह एक प्रथम एवं सराहनीय प्रयास है।

द्वि विमीय एवं त्रि विमीय निर्देशांक ज्यामिति के सभी आवश्यक शीर्षकों को क्रमशः छः व ग्यारह अध्यायों में सुधी पाठकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनके निराकरण सहित लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में प्रस्तुत सभी अध्याय, भारत देश के हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों में चलने वाले ज्यामिति आधारित नवीन पाठ्यक्रमों के अनुरूप हैं। प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री में प्रयुक्त भाषा अत्यन्त सरल, प्रचलित, सुबोध, सुस्पष्ट तथा रेखाचित्रों से परिपूर्ण है। ज्यामिति के सिद्धांतों एवं नियमों को स्पष्ट करने के लिए अधिकाधिक साधित उदाहरणों का प्रयोग किया गया है। गणित के सभी तकनीकी शब्दों को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, द्वारा प्रमाणित शब्द संग्रह एवं शब्दावली के अनुसार प्रयोग में लाया गया है। अंकों, प्रतीकों एवं चिन्हों के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंक प्रणाली का प्रयोग किया गया है। सभी अध्यायों में साधित उदाहरणों के उपरांत अभ्यास(प्रश्नावली) पाठकों के अत्यधिक अभ्यास हेतु प्रस्तुत किये गये हैं। जो पाठकों के लिए अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होंगे।

इस संदर्भ में मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है कि यह पुस्तक सभी स्नातक(बी0 ए0 एवं बी0 एस–सी0) छात्र/छात्राओं के लिए अत्यन्त ही लाभकारी सिद्ध होगी।

मैं एक समीक्षक के रूप में इस पुस्तक को छात्र/छात्राओं के हित में लिखी गई गणित विषय की महत्वपूर्ण विधा "ज्यामिति" में अत्यंत ही उपयोगी मानता हूँ तथा लेखक एवं प्रकाशक को इस हेतु आभार ज्ञापित करता हूँ। मैं यह आशा भी व्यक्त करता हूँ कि लेखक अपने इस प्रयास को पाठकों एवं छात्र/छात्राओं के हित में जारी रखेंगे।

समीक्षक– **डॉ0 एन0 के0 शर्मा**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
लखनऊ क्रिश्चियन डिग्री कॉलेज
लखनऊ(उ0 प्र0), भारत